International Journal of Sanskrit Research 2015; 1(2): 14-17

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2015; 1(2): 14-17
© 2015 IJSR
www.sanskritjournal.com
Received: 15-01-2015
Accepted: 10-02-2015

Chandragupta Bhartiya
Assistant Professor (guest),
Departmant of Education,
Shyama Prasad Mukhurji College,
University of Delhi,
Delhi-110026

Correspondence
Chandragupta Bhartiya
Assistant Professor (guest),
Departmant of Education,
Shyama Prasad Mukhurji College, University of Delhi,
Delhi-110026

दारा शुकूह अनूदित श्रीमद्भगवद्गीता का फ़ारसी अनुवाद – एक समीक्षात्मक अध्ययन

चन्द्रगुप्त भारतीय

दारा शुकूह एक परिचय

दारा शुकूह एक उच्च श्रेणी का विद्वान् , विलक्षण प्रतिभा-सम्पन्न एक दार्शनिक व विशिष्ट ज्ञान एवं लेखन शक्ति से युक्त दैवीय गुणों वाला एक लेखक था, जिसका सारा जीवन ज्ञान अर्जन करने व उनको बांटने में लग गया। उसमें कई भाषाओं को समझने, लिखने व बोलने का सामर्थ्य था। उसका एक ही उद्देश्य था – इस्लाम व हिन्दू धर्म रूपी दो समुद्र के बीच की दूरी को खत्म करना। अपने इसी लक्ष्य को पूरा करने के लिये उसने उपनिषद् व भगवद्गीता का फ़ारसी अनुवाद किया। इसके अतिरिक्त वह चित्रकला व फ़ारसी की सुलेख विद्या में भी निपुण था।

शाहजहां का बड़ा बेटा दारा शुकूह विशिष्ट ज्ञानशक्ति सम्पन्न संस्कृत एवं फ़ारसी भाषा का एक महान् विद्वान था। संस्कृत भाषा के प्रति उसका गहरा लगाव था। इसका प्रमाण उनकी रचनाएँ हैं। जिनमें से एक संस्कृत में लिखित ग्रन्थ समुद्र-संगम है तथा अन्य दो 50 उपनिषदों एवं भगवद्गीता का फ़ारसी अनुवाद है। साथ ही दारा ने –योगवाशिष्ठ- का भी फ़ारसी में अनुवाद किया था, जिसकी पाण्डुलिपि ख़ुदा बख़्श ओरिएन्टल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना में उपलब्ध है। दारा के जो अनेक पत्र मिलते हैं जिनका उल्लेख सूफ़ियाना-ख़तूत में है। उनमें से एक पत्र संस्कृत भाषा में लिखा हुआ मिलता है, जिसे दारा द्वारा इलाहाबाद के एक महात्मा को लिखा गया था।

यद्यपि राजनीति में उसका प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा था तथापि साहित्य व ज्ञान के क्षेत्र में किये गए श्रेष्ठ कार्यों के कारण उसकी प्रसिद्धि जगद्–व्याप्त हो गयी। भारतीय समाज में एकरसता को बढ़ाने का जो कार्य उसके परदादा अकबर ने शुरू किया था उसे दारा ने अत्यन्त निष्ठा से आगे बढ़ाया। अकबर का कार्य जहाँ राजनीतिक उद्देश्य से प्रेरित था, वही दारा शुकूह स्वयं हिन्दू धर्म व दर्शन से प्रभावित था तथा उसमें समस्त मानवों के कल्याण का मार्ग ढूढ़ँता था। उसका यह कार्य आत्मसुख के लिये किया गया एक महान् प्रयत्न था।

राजनैतिक दुर्योग के कारण उसका यह संकल्प पूर्णतया सफल नहीं हो पाया परन्तु उसकी दूरदर्शी आन्तरिक दृष्टि शताब्दियों के लिये भारतीय सहिष्णु जनमानस के लिये प्रेरणा का स्रोत सिद्ध हुई है।

'भगवद्गीता'- दारा शुकूह कृत फ़ारसी अनुवाद -

दारा शुकूह ने भगवद्गीता का फ़ारसी अनुवाद 1569 हिज्री क़मरी में किया था। उसने इसे सरूदे-इलाही (سرود الهی) अर्थात् ईश्वर का गीत कहा है। यह फ़ारसी अनुवाद नस्र (गद्य) में है तथा भगवद्गीता के समान ही 18 अध्यायों में विभक्त है। यह अनुवाद भगवद्गीता का शब्दशः अनुवाद नहीं है। इसमें संस्कृत के भगवद्गीता के अनेक पारिभाषिक शब्दों के लिए इस्लाम सम्मत पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किया गया है। यथा –

- ✓ प्रज्ञावान् – ज्ञान का स्वामी (अरबाबे-दानिश – ارباب دانش), -(पेज न.- 45, 2.11)
- ✓ तत्वदर्शिभिः - वास्तविकता को जानने वाला (दानन्दगाने-हक़ीक़त – داننــــدگان حقیقت), -(पेज न.- 46, 2.16)
- ✓ पाप, पापी – गुनाह, गुनाहगार (گناه گنـــاهگار) - (पेज न.- 47, 2.33)
- ✓ परमात्मा – उत्पन्न करने वाला (आफ़रीदगार - آفریدگار) - (पेज न.- 50, 2.48)
- ✓ समाधौ – ईश्वरीय ज्ञान (मअरफ़ते- आफ़रीदगार – معرفت آفریدگار) - (पेज न.- 50, 2.53)

दाराकृत भगवद्गीता के फ़ारसी अनुवाद का प्रथम सम्पादन डा. सैय्यद मुहम्मद रज़ा जलाली नाईनी ने 1980 ई. (1400 हिज्री) में

किताबख़ाना-ये-तहूरी (तेहरान) से किया, जो तीन पाण्डुलिपियों पर आधारित है। यह शोध तथा भूमिका सहित आलोचनात्मक संस्करण है। ये तीन पाण्डुलिपियाँ हैं –

1.- INDIAN OFFICE LIBRARY (IOL), लंदन में प्राप्त पाण्डुलिपि। यहां के सूची निर्माता डा. इथे ने इसे दारा शुकूह से सम्बद्ध बताया है, क्योंकि इस पाण्डुलिपि के लेखक (क़ातिब) ने इसे दारा शुकूह की रचनाओं में एक बताया है।

2.- एशियाटिक सोसायटी आफ बंगाल से प्राप्त पाण्डुलिपि। इस पर आबे-ज़िंदगी (یزندگ آب) - ज़िंदगी का पानी (अर्थात् अमृत) लिखा हुआ है। इस पाण्डुलिपि को दाताराम नामक क़ातिब ने लिखा है।

3.- यह पाण्डुलिपि दारा शुकूह के समय में लिखित महाभारत की पाण्डुलिपि (हस्तलिखित प्रति) छठे पर्व (भीष्म पर्व) से ली गई है, जिसका समय 1887 ई. बताया गया है।

दारा शुकूह अनूदित भगवद्गीता के फ़ारसी अनुवाद की समीक्षा

दारा शुकूह द्वारा अनूदित भगवद्गीता का फ़ारसी अनुवाद भगवद्गीता का एक भावानुवाद है, जहाँ कई स्थलों पर श्लोकों तथा शब्दों का व्याख्यात्मक अनुवाद प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन करते हुए जो बातें सामने आयी उनमें अनुवादगत सरलता एवं काव्यात्मकता के अतिरिक्त अशुद्ध व दोषपूर्ण अनुवाद भी प्राप्त होते है

जिनका होना स्वभाविक है। इसका कारण दारा का भारतीय-परम्परा, संस्कृति तथा धर्म एवं दर्शन के आधार-भूत ज्ञान की कमी का होना है। उन्होंने भगवद्गीता के कई श्लोकों का अनुवाद छोड़ भी दिया है, तथा कुछ श्लोकों का अपूर्ण अनुवाद किया है। दारा ने भगवद्गीता के फ़ारसी अनुवाद में जिन संस्कृत के शब्दों का फ़ारसी भाषा में अनुवाद किया है वे शब्द आज हिन्दी तथा उर्दू आदि भारतीय भाषाओं में भी प्रचलित मिलते हैं जैसे-युद्ध के लिए जंग (جنگ), महान् के लिए बुज़ुर्ग (بزرگ), अग्नि के लिए आतिश (آتش), पृथिवी/भूमि/क्षेत्र के लिए ज़मीन (نیزم), आदि। दारा द्वारा अनूदित फ़ारसी भगवद्गीता में जिन पदों का फ़ारसी अनुवाद दोषपूर्ण प्राप्त होता है उनका प्रमुख कारण दोनों ही भाषाओं में भाषागत तथा सांस्कृतिक अन्तर का होना ज्ञात होता है। जैसे कि- श्वपकः(चण्डाल) (5/19-Aj.-32) का फ़ारसी अनुवाद दारा ने –झाड़ू देने वाला किया है (ख़ाकरूब – Aj-32) किया है, क्योंकि फ़ारसी भाषा में चण्डाल की अवधारणा नहीं है, अतः इसका पूर्णानुवाद हो पाना कठिन है। यह ठीक उसी प्रकार से है जैसे जोराष्ट्रीयन धर्म के जख़्मा (جخما) (अर्थात् मृत शरीर को पक्षियों के भोजनार्थ पर्वत आदि पर छोड़ देना) की परिकल्पना भारतीय हिन्दू धर्म एवं संस्कृति में नहीं है अतः इस (जख़्मा) का इसके भाव के साथ किसी अन्य भाषा में अनुवाद का मिल पाना कठिन है। सम्भवतः यही कारण है कि दारा ने संस्कृत के पदों का फ़ारसी अनुवाद तद्देशिक व तात्कालिक प्रसङ्गों एवं परिप्रेक्ष्यों के आधार पर उस अर्थ के निकटतम अर्थ को ग्रहण करके फ़ारसी अनुवाद किया है। अनुवाद में अन्तर का एक कारण दारा का भारतीय धर्म एवं दर्शन के आधार-भूत ज्ञान में कमी का होना भी है।कहीं-कहीं पर दारा शुकूह ने भगवद्गीता के कुछ पदों का फ़ारसी अनुवाद नहीं किया है। इसके स्थान पर वे श्लोक का भावानुवाद करते हुए आगे बढ़ जाते हैं। कहीं उन्होंने पदों का अनुवाद तो किया है परन्तु वे अनुवाद संस्कृत श्लोक को पूर्ण रूप से बता पाने में सक्षम नहीं हैं। उदाहरण के लिए – नित्य (2/18-Aj.-9) - के ही फ़ारसी अनुवाद को ले लेते हैं, जिसका अनुवाद दारा ने –पुराना- किया है, जो संस्कृत-दार्शनिक-पद –नित्य- को बता पाने में पूर्णतः अक्षम है। दारा ने संस्कृत भगवद्गीता के पदों का व्याख्यात्मक अनुवाद भी किया है जिनमें अधिकतर सरल, निर्दुष्ट व स्पष्ट हैं। कहीं –कहीं इनमें भी त्रुटि देखी जाती है। दारा शुकूह ने संस्कृत भगवद्गीता के कुछ पदों का काव्यात्मक फ़ारसी अनुवाद भी प्रस्तुत किया हैं। कहीं-कहीं उन्होंने कुछ सम्पूर्ण संस्कृत श्लोक का ही काव्यात्मक अनुवाद किया है (यथा- 4/7,-Aj.-24, 6/30- Aj.-38, 18/66-Aj.-121)।

इसके अतिरिक्त दारा शुकूह ने भगवद्गीता के कुछ पदों का अनुवाद तो किया है, परन्तु वे कई स्थलों पर अनुवाद में संस्कृत पद के पूर्ण अर्थ को बता पोने में सक्षम नहीं हुए हैं। उदाहरण के लिए हम -धर्म और अधर्म - के ही फ़ारसी अनुवाद को ले लेते हैं, जिसका अनुवाद दारा ने –अच्छा कार्य और बुरा कार्य- किया है, जो संस्कृत के –धर्म और अधर्म- को बता पाने में पूर्णतः सक्षम नहीं है। धर्म और अधर्म का अर्थ है –कर्त्तव्य तथा अकर्त्तव्य-। अच्छा कार्य और बुरा कार्य- इसका सही अनुवाद नहीं है। दारा शुकूह द्वारा अनुवाद में की गई च्युतियों के कारणों में मुख्य कारण उसके संस्कृत के स्रोतों की अल्पज्ञता का होना है।

भगवद्गीता के दार्शनिक शब्दावली का दारा शुकूह द्वारा किए गए फ़ारसी अनुवाद का मूल्याङ्कन -

दारा ने यहां दार्शनिक शब्दावली के अनुवाद का यद्यपि शुद्ध व दोष-रहित फ़ारसी अनुवाद करने का प्रयत्न किया है तथापि इनमें त्रुटियाँ रह ही जाती हैं। निश्चित रूप से इसका कारण भारतीय धर्म-दर्शन के आधारभूत ज्ञान का अभाव होना है। साथ ही इसका एक बड़ा कारण दोनों भाषाओं की संस्कृति में अन्तर का होना भी है। दारा कई स्थलों पर वे भ्रमित हुए भी नज़र आते हैं यथा – योग और क्षेम का अनुवाद वे –पाना और नहीं पाना- करते हैं, जो निश्चित रूप से योग-क्षेम का दूषित अनुवाद है।

भगवद्गीता में आए दार्शनिक पद –अक्षर - का दारा शुकूह द्वारा किए गए फ़ारसी अनुवाद में भिन्नता देखने को मिलती हैं। जहाँ एक जगह 8/3-Aj.-47 में वे अक्षर का व्याख्यात्मक अनुवाद करते हुए लिखते हैं कि -'जो किसी भी कारण से नष्ट नहीं होता है'। वहीं दूसरी जगह 11/18-Aj.-68 में अक्षर को वे –'नाश-रहित'-(बी-ज़माल) लिखते हैं, जबकि अन्यत्र 15/16-Aj.-90 में आक्षर का वे लिप्यन्तरण –अच्हर (اچهر)- मात्र करते हैं, जिसे दोष-रहित अनुवाद नहीं माना जा सकता है, क्योंकि अक्षर पद का अर्थ यहाँ भी –अविनाशी- ही है जिसका अनुवाद दारा –बी-ज़वाल- आदि भी कर सकते थे। यहाँ ऐसा प्रतीत हो रहा है कि दारा सम्भवतःअपनी इच्छानुसार अक्षर पद का कहीं अनुवाद करते हैं तो कहीं लिप्यन्तरण भर कर देते हैं। इसी प्रकार हम –ब्रह्म- के साथ भी देखते हैं। जहाँ 10/32-Aj.-63 में दारा ब्रह्म का अनुवाद –उत्पन्न करने वाला (आफ़रीदगार)- करते हैं वहीं 2/72-Aj.-16 में वे ब्रह्म का लिप्यान्तरण –बरहमा (برهما)- मात्र देखते हैं इन दोनों ही स्थलों पर दारा ब्रह्मा तथा ब्रह्म में भ्रान्त हुए प्रतीत होते हैं।

भगवद्गीता के इस फ़ारसी अनुवाद में हम ईश्वर,परमेश्वर अथवा ब्रह्म आदि का अनुवाद अथवा लिप्यन्तरण ही देखते हैं कहीं पर भी इसके लिए इस्लाम-स्थित ख़ुदा या अल्लाह शब्द का प्रयोग नहीं हुआ है। सम्भवतः इसका कारण यह रहा होगा कि इस्लाम में ख़ुदा निराकार हैं जबकि हिन्दू धर्म में ईश्वर अथवा भगवान साकार भी हो सकता है तथा अवतार भी ले सकता हैं। अतः अनुवाद में अवधारणात्मक भ्रान्तियों से बचने के लिए शायद दारा ने ईश्वर का ख़ुदा अथवा अल्लाह अनुवाद नहीं किया है।

2/64-Aj.-15 में दारा ने राग तथा द्वेष का अनुवाद प्रिय तथा अप्रिय (दूस्ती तथा दुश्मनी -یدشمن و یدوست) किया है जो सही अनुवाद प्रतीत नहीं होता है क्योंकि भारतीय दर्शन में राग तथा द्वेष दो वृत्तियाँ हैं जिनके कारण से वस्तुएँ प्रिय तथा अप्रिय लगती हैं परन्तु फ़ारसी में अनूदित दूस्ती तथा दुश्मनी का अर्थ प्रिय तथा अप्रिय है जिसे संस्कृत-दार्शनिक-पद राग तथा द्वेष का पूर्ण शुद्ध अनुवाद नहीं माना जा सकता है। यही किरण है कि किसी दूसरी भाषा के दार्शनिक पदों का किसी अन्य भाषा में पूर्ण अर्थ के साथ अनुवाद किया जाना पूर्ण सक्षम नहीं है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए राजीव मलहोत्रा ने BEING DIFFERENT (AN INDIAN CHALLENGE TO WESTERN UNIVERSALISM) के CHAPTER NO.-5 – NON-TRANSLATABLE SANSKRIT VERSUS DIGESTION (PAGE NO.-22O-306) में बताया है कि - ओम् का AMEN OR ALLAH, शान्ति का PEACE, ब्रह्म अथवा ईश्वर का अनुवाद GOD, ऋषि,योगी तथा गुरु का अनुवाद JESUS OR PROPHET OR SAINT,शिव का अनुवाद DESTROYER, आत्मा का SOUL OR SPIRIT, वेद का BIBLE OR GOSPEL,धर्म का RELIGION OR LAW, दुःख का SUFFERING, शक्ति का HOLY SPIRIT, देवता का PAGAN GODS, यज्ञ

का CHIRISTIAN SACRIFIC, कर्म का REDEMPTION, कर्म-योग का CHRISTION WORKS, तथा मोक्ष अथवा जीवनमुक्ति का SALVATION अनुवाद सही नहीं हैं क्योंकि ये अनुवाद पूर्ण रूप से भारतीय-दार्शनिक पदों के अर्थ को बता पाने में सक्षम नहीं हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रख कर दारा ने भगवद्गीता के फ़ारसी अनुवाद में कुछ दार्शनिक पदों का अनुवाद न करके उनका लिप्यन्तरण मात्र किया है, यथा – योग (2/39-Aj.-12), यज्ञ (2/72-Aj.-16),यम (10/29-Aj.-62), चेतना (13/7-Aj.-82), प्राण-अपान-व्यान-उदान-समान (18/14-Aj.-115) आदि। दार्शनिक दृष्टि दारा का यह कार्य दोष-रहित माना जाएगा क्योंकि वह समझता था की किसी दूसरी भाषा के दार्शनिक पदों का किसी अन्य भाषा में पूर्ण अर्थ के साथ अनुवाद नहीं किया जा सकता है। परन्तु दारा की इस प्रकार की प्रवृति सर्वत्र देखने को नहीं मिलती है, क्योंकि कई जगहों पर वे संस्कृत-दार्शनिक पदों का फ़ारसी अनुवाद करते हुए नज़र आते हैं यथा – मोक्ष को 2/15 –Aj.-9 में ख़लासी (یخلاص) जबकि 2/31-Aj.-11 में रास्तगारी (یراســـتگار) लिखते हैं , एक जगह ब्रह्म को आफ़रीदगार (دگـاریآفـر)-2/48-Aj.-12 कहते हैं तो वहीं दूसरी जगह 10/32-Aj.-63 में परमात्मा के लिए भी आफ़रीदगार शब्द का प्रयोग करते हैं । जबकि –ईश्वर के लिए –साहब- (صـاحت)-15/4-Aj.-93 शब्द का प्रयोग करते हैं। हालाँकि ये अनुवाद कुछ हद तक अर्थ को तो बता पाने में समर्थ हैं परन्तु उस दार्शनिक पद के भाव अथवा कर्म को बता पाने में अक्षम हैं, जो भाव मोक्ष,ब्रह्म,परमात्मा,ईश्वर आदि से भारतीय दर्शन में ज्ञात हैं तथा जिस कर्म/विधि से इनकी प्राप्ति/ज्ञान होता है। इसी कारण एक भाषा से दूसरी भाषा में दार्शनिक पदों के अनुवाद में त्रुटियाँ देखी जाती है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि दारा ने यद्यपि भगवद्गीता के दार्शनिक पदों का दोष-रहित अनुवाद/लिप्यन्तरण करने का प्रयत्न किया है तथापि कहीं-कहीं इनमें त्रुटियाँ पाई जाती है, जो संस्कृत पद के पूर्णार्थ को बता पाने में असक्षम हैं।

इसके अतिरिक्त जहाँ हम यह देखते हैं कि दारा शुकूह ने भगवद्गीता की कुछ श्लोकों का फ़ारसी अनुवाद नहीं किया है, वहीं जिस 13वें अध्याय के प्रथम श्लोक का दारा ने फ़ारसी अनुवाद किया है वह आज भगवद्गीता के किसी भी संस्करण में नहीं प्राप्त होता है ।यद्यपि प्रकृत फ़ारसी अनुवाद 13वें अध्याय से ही सम्बन्धित है तथापि इस फ़ारसी अनुवाद का संस्कृत श्लोक आज प्राप्त नहीं होता है। यह एक अति महत्त्वपूर्ण शोधचर्चा का बिन्दु हो सकता है कि वह श्लोक किस सीमा तक प्रामाणिक है तथा वह अन्य संस्करणों में क्यों नहीं मिलता।तथा सबसे महत्त्वपूर्ण यह कि उसका संस्कृतपाठ क्या रहा होगा। प्रकृत फ़ारसी अनुवाद का हिन्दी अर्थ है –

"अर्जुन ने कहा - हे श्री कृष्ण! पुरुष, प्रकृति,क्षेत्र,क्षेत्रज्ञ,ज्ञान और ज्ञेय का क्या अर्थ है? मुझसे कहो, मैं चाहता हूँ कि इन सभी के विस्तविक सत्य को जाँनू" -(Aj.-81)

پرکـــه و پرکـــت !کرشـــن یسـر یا کـه گفـــت ازجن)
من بـا دارد؟ یمعن چه هیگ و انیگ و وچهـترگ وچهـترگ
.)بـــدانم کـدام هر قـتیحق کـه خواهم یم ،بگـــو

(अर्जुन गुफ़्त के ऐ सरी (श्री) करिशन! परकरित (प्रकृति) व पुरुक्हे (पुरुष) व चहतरेह (क्षेत्र) व चहतरग (क्षेत्रज्ञ) व गयान (ज्ञान) व गयेह (ज्ञेय) चेह म'अनी दाररद? बा मन बेगू, मी ख़ाहम केह हक़ीक़ते-हर कुदुम बेदानम।) -(Aj.-81)

संस्कृत भगवद्गीता में आज इस अर्थ का श्लोक नहीं मिलता है, यह बात अजमल ख़ाँ भी पादटिप्पणी-1, पेज न.-81 में कहते हैं। आज संस्कृत भगवद्गीता में 13/1 का जो श्लोक मिलता है उसमें श्री कृष्ण से कथन का आरम्भ होता है , जबकि दारा के 13/1 के फ़ारसी अनुवाद में अर्जुन के प्रश्न से अध्याय का आरम्भ होता है , जो आज नहीं मिलता है। इस प्रकार संस्कृत भगवद्गीता के 13वें अध्याय में कुल 34 श्लोक मिलते हैं, जबकि दारा शुकूह के 13वें अध्याय के फ़ारसी अनुवाद में 35 श्लोकों का फ़ारसी अनुवाद मिलता है।

यद्यपि भिन्न-भिन्न शासकों ने भिन्न-भिन्न उद्देश्यों के आधार पर ये अनुवाद करवाएँ, परन्तु इन सब से भारतीय संस्कृति के विस्तार एवं सास्कृतिक मेल-जाल का महान् लाभ हुआ। शायद इसी तथ्य को ध्यान में रखकर दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के वरिष्ठ रीडर डा. पूरनचन्द टंडन ने अनुवाद को सांस्कृतिक मूल्यों के आदान प्रदान का एक ऐसा बहुदिशागामी तथा बहु-आयामी सेतु बताया है जो वैश्वीकरण को साकार एवं सार्थक करने के लिए निर्बाध आवागमन के रास्ते खोलता है। इसलिए यदि ट्रांसलेशन को ट्रांसरिलेशन कहा जाए तो अनुचित न होगा। दारा शुकूह द्वारा भगवद्गीता का किया गया फ़ारसी अनुवाद यद्यपि सराहनीय है तथापि इसमें अशुद्धियों के होने के कारण इसे फ़ारसी भाषा का एक आदर्श अनुवाद नहीं माना जा सकता है। दारा शुकूह कृत भगवद्गीता के इस फ़ारसी अनुवाद को दुबारा से सही करने की अत्यन्त आवश्यकता है, अन्यथा यह फ़ारसी अनुवाद मूल संस्कृत भगवद्गीता के दोषपूर्ण संदेश को ही प्रस्तुत करेगा साथ ही इस अनुवाद को पढ़ने वाले पाठक भगवद्गीता के वास्तविक ज्ञान से वंचित रह जाएंगे। यद्यपि अजमल ख़ाँ तथा नाईनी ने पादटिप्पणी में कहीं-कहीं दारा के अनुवाद को बताकर उनको सही भी किया है तथापि अनुवाद में त्रुटियाँ रह ही गई हैं। कई स्थलों पर अजमल ख़ाँ तथा नाईनी भी पादटिप्पणी में ग़लत अनुवाद कर जाते हैं, जिसका कारण स्पष्टतः इन दोनों का ही संस्कृत ज्ञान में कमी का होना है।इन दोनों ने ही भगवद्गीता के अंग्रेजी अनुवाद की सहायता से दारा कृत भगवद्गीता के फ़ारसी अनुवाद का संपादन किया है। अजमल ख़ाँ स्थल-स्थल पर राधाकृष्णन् द्वारा अनूदित भगवद्गीता के अंग्रेजी अनुवाद का उल्लेख करते हैं। निश्चित रूप से संस्कृत ज्ञान के अभाव में संस्कृत ग्रंथ के अनुवाद के संपादन में त्रुटि होना स्वभाविक ही है।

भगवद्गीता के अरबी, फ़ारसी एवं उर्दू अनुवादों के सर्वेक्षण में उर्दू भाषा में अधिक अनुवाद मिलते हैं, क्योंकि उर्दू हिंदुस्तान की कई भाषाओं में से एक है। अतः इसमें भगवद्गीता के अधिक अनुवाद का मिलना स्वाभाविक है। फ़ारसी भाषा में उर्दू की अपेक्षा कम अनुवाद मिलते हैं, इसका कारण यह है कि फ़ारसी एक समय विशेष में भारत की राजभाषा हुआ करती थी। भगवद्गीता के जो फ़ारसी अनुवाद आज प्राप्त होते हैं उनमें अधिकतर मध्यकाल में किये गए है। यही कारण है कि गीता के फ़ारसी अनुवाद उर्दू अनुवाद की अपेक्षा कम हैं। भगवद्गीता के सर्वाधिक कम अनुवाद अरबी भाषा में प्राप्त होते हैं क्योकि अरब भाषा अथवा अरब जाति के साथ भारतीय जनमानस का कभी कोई साक्षात् सम्बन्ध नहीं रहा है, फिर भी अरबी भाषा में भगवद्गीता का अनुवाद मिलता है जो इसकी लोकप्रियता का दर्शाता है।

सन्दर्भग्रन्थ सूची

- श्रीमद्भगवद्गीता (मूल संस्कृत, परिच्छेद, अन्वय और साधारण भाषाटीका सहित), गीताप्रेस, गोरखपुर।
- श्रीमद्भगवद्गीता (मूल-संस्कृत), श्री रामकृष्ण मठम्, मैलापुरम्, मद्रपुरी।
- भगवद्गीता, (शंकराचार्य ग्रंथावली, द्वितीय भाग,शांकरभाष्य सहित), मोतीलाल बनारसी दास, पूना, वर्ष – 1929
- श्रीमद्भगवद्गीता (साधक सञ्जीवनी) हिन्दी टीका, स्वामी रामसुखदास, फ़्लेक्टसोप्रिण्ट, गोरखपुर (संवत् 2054)
- बगवतगीता (भगवद्गीता), मोहम्मद अजमल ख़ां (संपादक), अन्जुमने-रवाबते-फ़रहंगीये-हिंद, नई दिल्ली, वर्ष-1959
- मुगल दरबार, ब्रजरत्नदास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी – 1931 (प्रथम संस्करण)।
- संक्षिप्त भारतीय इतिहास, अनिल केसरी, अंडरस्टेंडिग इंडिया पब्लिकेशन, मुखर्जी नगर, दिल्ली – 09, वर्ष – 2011(चौथा संस्करण)।
- समुद्रसंगमः , आचार्य बाबूलाल शुक्ल शास्त्री (संपादक एवं व्याख्याकार), भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली व वाराणसी, प्रथम संस्करण, वर्ष – 1995
- अलंकार शास्त्र का इतिहास , डॉ. कृष्ण कुमार, साहित्य भंडार, मेरठ, छठा संस्करण, वर्ष – 2000
- बहगवदगीता (फ़ैजी कृत भगवद्गीता का पद्यानुवाद), मुंशीराम सप्रू, फ़रेहगडढ़,वर्ष – 1844
- बहगवदगीता (दारा शुकूह अनूदित फ़ारसी भगवद्गीता), सैयद मोहम्मद रज़ा जलाली नाईनी (संपादक), महफ़ूज़ो-मख़सू कितबख़ाना-ए-तहूरी, (तेहरान-ईरान) वर्ष – 1980 ई. - (1400 हिज्री)।
- बहगवदगीता (भगवद्गीता का फ़ारसी व्याख्यात्मक अनुवाद), भक्तिवेदान्त बुक ट्रस्ट (ISCON द्वारा प्रकाशित) सिडनी, आस्ट्रेलिया (वर्ष -1971)।

- हदीस (7946), संपादक- हजरत अमीन, व्याख्याकार– जलालुद्दीन मोहम्मद ख़ानसारी, प्रकाशक- जलालुद्दीन आरमोहद्देस अर्मेवय प्रकाशन स्थल- अल्-इस्लामेयह बेरूत,अल्तरास मदरसा, तेहरान यूनिवर्सिटी, (तेहरान-ईरान) तीसरा संस्करण -1360 हिज्री।
- Biography of Dara Shukhoh – vol.-I, Kalika Ranjan Qanungo, S.C. Sankar and Sons ltd. Colcuta, 1952 (second edition).
- Sirr-i-Akbar , vol. – I (Brihadaaranyaka Upnishada), Dr. Salma Mahafooz, Meharchand Lachhamandas Publication, New Delhi – 02, 1988 (1st Edition).
- The concise Encyclopedia of Islam , Cyril Glasse, Stacey International, London, 1989 (1st Edition)
- Majma-ul-Bahrain (Edited in the original Persian with English translation, Notes and Variants), M. Manfuj-ul-Haq, Printed at Baptist Mission Press, Published by the Asintic Society of Bangal, Calcutta, 1929
- Being Different (An Indian Challenges to Western Universalism), Rajiv Malhotra, Harper Collins Publishers India, New Delhi, 2011 (1st Edition)
- Dara Shukhu's Persian translation of Indic work and the Mughal Genealogies of Hinduism, Supriya Gandhi (South Asia Studies, University of Pennsylnania)
- दारा शुकूह की संस्कृत सेवा , मैनेजर पाण्डेय, संस्कृत संस्कृति और संस्कार, प्रो. शशि प्रभा कुमार (संपादक), विद्या निधि-प्रकाशन, दिल्ली
- Sanskrit and Persian , N.S. Shukla, संस्कृत संस्कृति और संस्कार, प्रो. शशि प्रभा कुमार (संपादक), विद्या निधि-प्रकाशन, दिल्ली
- The translation of Sanskrit classic in Persian language during the Delhi , Iqtidar Husain Siddiqi, Indo-Persian studies: Text and translation (Persian Research Journal), Edited by – Prof. Chandra Shekhar, Department of Persian, University of Delhi, Delhi-07, 2007.
- Reception of Indian Astronomical treatises and hand books in Sanskrit by Muslim Scholars of medieval India , S.M. Razaullah Ansari, Indo-Persian studies: Text and translation (Persian Research Journal), Edited by – Prof. Chandra Shekhar, Department of Persian, University of Delhi, Delhi-07, 2007.
- Some Important translation of Sanskrit works into Persian and Arabic: An Introduction to the MISS. of national museum, New Delhi , Nasim Akhtar, Indo-Persian studies: Text and translation (Persian Research Journal), Edited by – Prof. Chandra Shekhar, Department of Persian, University of Delhi, Delhi-07, 2007.
- Persian as a Bridge between Sanskrit and Persian – with special reference to'YOGA- VASHISHTHA'. , Lalita Kuppusoamy, Indo-Persian studies: Text and translation (Persian Research Journal), Edited by – Prof. Chandra Shekhar, Department of Persian, University of Delhi, Delhi-07, 2007.
- मानव संस्कृति और उसकी आत्मा का प्रकाशकः-फ़ारसी अनुवाद , पूरनचंद टंडन, Indo-Persian studies: Text and translation (Persian Research Journal), Edited by – Prof. Chandra Shekhar, Department of Persian, University of Delhi, Delhi-07, 2007.
- अहदे-अकबरी के फ़ारसी तर्जुमे, हिन्दुस्तानी तहज़ीब को समझने की एक कोशिश, वजी उद्दीन, Indo-Persian studies: Text and translation (Persian Research Journal), Edited by – Prof. Chandra Shekhar, Department of Persian, University of Delhi, Delhi-07, 2007.
- Contribution of Muslims in Sanskrit, Prof. Satyavarma Shastri, Sanskrit Studies (New Perspective), Edited by Prof. Satyavarma Shastri, Yash Publications, Delhi-31, 2007
- अकबर के समय में हुए संस्कृत के ग्रन्थों के फ़ारसी अनुवादों का परिचय, अली अकबर शाह, Persian Research journal, Edited by – Dr. Allauddin Shah, Department of Persian, University of Delhi, Delhi-07, 2008.
- गीता का उर्दू अनुवाद। (ترجمہ اردو کا تای گ), अजय मालविया, उर्दू दुनिया (उर्दू पत्रिका) संपादक- मो. नुसरत ज़हिर, National Conncil for Promotion of Urdu language (NCPUL), Faragh-e-Urdu Bhavan, New Delhi-25
- Indian stories in Persian literature , S.A. Quresi , Department of Persian, University of Delhi, Delhi-07, 1967
- Abul Fazal's Contribution to Persian prose, Nihal Chand, Department of Persian, University of Delhi, Delhi-07, 1978
- "Yoga vashistha"– A critical and comparative study of Persian version and its original Sanskrit source , Lalita Kuppuswamy , Department of Persian, University of Delhi, Delhi-07, 2007
- Mughals in India (A Bibliographical survey of manuscripts), D.N.Marshall, Manasell Publishing ltd. London and New York, Published by Asia Publishing House, 1967 (1st Edition).
- फ़रहंगे-जामे (नामहा-ए-ईराने-ज़मीन), इस्माईल हुनरमंद निया, साये-गुस्तर,कज़वीन (चहार राहे-नादरी), ईरान, वर्ष – 1963 ई. - (1383 हिज्री)
- फ़रहंगे-हमराह (फ़ारसी-अंग्रेजी शब्दकोश), अब्बास आर्यनपुर काशानी तथा मनूचेहर आर्यपुर कशानी, हमकाराने-मा दर चापख़ाखानेह (प्रकाशन), सेपहर (ईरान)
- Oxford English Dictionary (English to English), Catherine Soanes , Oxford University Press, New Delhi, 2001
- Bhargava's Standard Illustrated dicitionary (English to Hindi), Prof. R.C. Pathak, Shree Ganga Pustakalay, Varanasi, 2004
- The Aryanpur Progressive English-Persian Dictionary, Manoochehr Aryanpur Kashani, Hamkaaraanemaa dr chapkhane Sephar, Iran
- The student's Sanskrit English Dictionary, Vaman Shivram Aapte, Rashtreye Sanskrit Sansthan, Naw Delhi, 2003
- संस्कृत-हिंदी कोश, वामन शिवराम आप्टे, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, 2000
- वाचस्पत्यम् (vol.-I-VI) बृहत् संस्कृताभिदानम् (संस्कृत विश्व कोश), श्री तारानाथ तर्कवाचस्पति, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थानम्, नई दिल्ली, 2002
- शब्दकल्पद्रुमः (vol.-I-V) (संस्कृत विश्व शब्दकोश), राजा राधाकान्त, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थानम्, नई दिल्ली, 2002